Chapter-4

# चतुर्थ अध्याय

## रामायण ( रामकथा ) से प्रेरित कृतियाँ

- पंचवटी
- साकेत
- प्रदक्षिणा

-- अंतरंग विवेचन :- कथावस्तु,
वस्तुगत आधार,
मौलिकता और
आधुनिकता

-- अभिव्यक्ति पक्ष- भाषा
(मुहावरें, लोकोक्तियाँ,
सूक्तियाँ), संवाद योजना,
रस योजना,
बिंब विधान,
अलंकार विधान,
छंद विधान.

मैथिलीशरण गुप्त को रामकथा तथा रामभक्ति के संस्कार पूर्वजों से प्राप्त हुए थे. उनके पिता भी परम रामभक्त थे. उनकी " पंचवटी ", " साकेत " और " प्रदक्षिणा " तीनों रामकथा पर आधारित रचनाएँ हैं .

पंचवटी

" पंचवटी " का आरंभ प्रभु राम के मंगलगान से हुआ है. राम, सीता, लक्ष्मण पंचवटी की छाया में पर्णकुटीर बनाते हैं. राम वन में भी वैभवपूर्ण जीवन जीते हैं. उनके लिए वन और अयोध्या दोनों एक-से हैं. लक्ष्मणजी को इस बात का हर्ष होता है कि वे वन में सुखी हैं. शूर्पणखा आकर विवाह का प्रस्ताव करती है. लक्ष्मण द्वारा प्रस्ताव अस्वीकृत होने पर वह राम के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखती है. जब राम ने भी इन्कार कर दिया तब वह अत्यंत क्रोधित होकर कोमलरुप त्यागकर भयंकर रुप धारण करती है. उसी समय लक्ष्मण उसके नाक- कान काटकर उसे विरुप कर देते हैं. तत्पश्चात वह वहाँ से चली जाती है. इसी के साथ पंचवटी की कथा समाप्त हो जाती है.

साकेत

" साकेत " गुप्तजी का प्रसिद्ध महाकाव्य है, जिसका पुस्तकाकार प्रकाशन सन 1932 में हुआ. प्रारम्भ में इसके कुछ अंश " सरस्वती " में प्रकाशित हुए थे. यह काव्य बारह सर्गों में विभाजित है. इस प्रबन्धकाव्य का आरम्भ सरस्वती वंदना से हुआ है. इसके बाद कवि लक्ष्मण और ऊर्मिला के प्रेमालाप और उनके वाग्विनोद का वर्णन करता है. जब दासी मंथरा को पता चला कि राम का राज्याभिषेक होनेवाला है तब वह महारानी कैकेयी को राजादशरथ के विरुद्ध बहकाती है. वह कहती है--

" भरत से सुत पर भी संदेह, बुलाया तक न उसे जो गेह ।"

मंथरा के इस वाक्य से रानी कैकेयी कुपित हो जाती है ।

तथा राजा के आग्रह के कारण वह उनसे दो वरदान मागती है. एक तो भरत को राज्य और दूसरा राम को चौदह वर्ष का वनवास. यह सुनकर

राजा मूर्च्छित हो जाते हैं. वे पुत्र विरह की कल्पना ही नहीं कर पाते. राम ने कैकेयी से सारा वृत्तांत सुना और वे वनगमन के लिए उद्यत हुए. जब सुमंत खाली रथ लेकर आते हैं तब महाराज दशरथ प्राण त्याग देते हैं. भरत को ननिहाल से अयोध्या बुलाने के लिए दूत भेजा जाता है. भरत और शत्रुघ्न पिता की मृत्यु और राम, लक्ष्मण, सीता के वनगमन के समाचार से किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं. बादमें, भरत राम को लिवा लाने के लिए साकेतवासियों को लेकर चित्रकूट जाते हैं. चित्रकूट की सभा में कैकेयी अपने कृत्य के लिए पश्चाताप करती है. राम अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहते हैं. भरत राम की चरण-पादुका को लेकर अयोध्या आ जाते हैं. वहाँ वे उनकी पादुका को राज्यसिंहासन पर रखकर, सेवक के रुप में राज्य करते हैं. कवि ने ऊर्मिला की विरह-वेदना का और भरत- मांडवी के तपस्वी जीवन का वर्णन किया है. जब लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाते हैं तब हनुमान जी संजीवनी बूटी लेने के लिए जाते हैं. वे भरत के बाण से घायल होकर गिर जाते हैं. सचेत होने के बाद वे लक्ष्मण को शक्ति लगने तक की समस्त घटनाओं का वर्णन प्रस्तुत करते हैं. हनुमानजी, भरत से संजीवनी लेकर चले जाते हैं. साकेतवासी सीताहरण और लक्ष्मण-शक्ति की बात सुनकर युद्ध के लिए तैयार हो जाते हैं. उसी समय वशिष्ठजी योगविद्या से साकेतवासियों को राम- रावण युद्ध का दृश्य दिखाते हैं. इस युद्ध में राम विजयी होते हैं. अंतमें, राम, सीता, लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण अयोध्या वापिस आते हैं. भरत- राम का तथा लक्ष्मण- ऊर्मिला का मिलन होता है.

## प्रदक्षिणा

इस रचना का प्रारंभ मंगलाचरण से हुआ है. राजा दशरथ के घर चार पुत्रों का जन्म होता है. राम और लक्ष्मण की सहायता से मुनि विश्वामित्र निर्विघ्न यज्ञ करते हैं. सीता स्वयंवर में मुनि उन दोनों को लेकर जनकपुर जाते हैं. जब कोई भी राजा उस शिव धनुष को उठा नहीं पाया तब मुनि ने राम को आज्ञा दी. राम के धनुष चढ़ाते ही वह टूट जाता है. तब राजा जनक अपनी चारों पुत्रियों का विवाह राजा दशरथ के चारों पुत्रों से करते

193

हैं. राजा दशरथ राम को राज्य देना चाहते थे. लेकिन उसी समय कैकेयी दो वरदान माँगती है. एक तो राम को चौदह वर्ष के लिए वनवास और दूसरा भरत को राज्य. राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी वन में जाते हैं. तब शूर्पणखा लक्ष्मण को वरने के लिए आती है. लेकिन लक्ष्मण विवाहित होने के कारण उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देते हैं. लक्ष्मण क्रोध में आकर उसके नाक- कान काट डालते हैं. अपनी बहन का वैर वसूल करने के लिए रावण एक मायावी मृग को भेजता है. राम, सीता को रिझाने के लिए उसके पीछे दौड़ते हैं. लक्ष्मण भी राम की सहायता करने के लिए जाते हैं. तब रावण ऋषि के वेष में आकर सीता को हर ले जाता है. सीता को छुडाने के लिए राम रावण से युद्ध करते हैं. जिसमें राम की विजय होती है. राम, लक्ष्मण और सीता के साथ वापिस लौटते हैं. और अयोध्या का राज्य करते हैं.

## वस्तुगत आधार

### पंचवटी

" पंचवटी " तुलसीकृत " रामचरितमानस " पर आधारित है. तुलसीदासजी ने " रामचरितमानस " में शूर्पणखावाला कथानक को केवल पताकास्थानक की तरह लिखा है. उसमें कहीं भी काव्य- कौशल दिखलाने की चेष्टा नहीं की है. उसी प्रसंग को लेकर गुप्तजी ने खण्डकाव्य लिखा है.

साकेत - गुप्तजी रचित 'साकेत' की कथा

वाल्मीकि कृत " रामायण " और तुलसीदास कृत " मानस " पर आधारित है. " साकेत " की कथा का संगठन भवभूतिरचित " उत्तररामचरित " और कालिदास कृत " रघुवंश " के आधार पर हुआ है. गोस्वामी तुलसीदास जी ने " हनुमन्नाटक " और प्रसन्नराघव " का आधार लिया है. " साकेत " के कुछ स्थल " रामचरितमानस " से लिये गये हैं. कुछ स्थल वाल्मीकि रामायण तथा अन्य संस्कृत ग्रंथों से भी प्रभावित है.

194

## प्रदक्षिणा

" प्रदक्षिणा " का घटनाक्रम " रामचरितमानस " का अनुवर्ती है. कवि ने लक्ष्मण और ऊर्मिला के प्रसंग को, चित्रकूट के मिलन को नियोजित किया है. " साकेत " के अष्टम सर्ग से लक्ष्मण और ऊर्मिला का वार्तालाप उद्धृत हुआ है.

इस काव्य के अधिकांश छंद " पंचवटी " तथा " साकेत " से लिये गये हैं. " " पंचवटी " में वर्णित पूर्वाभास के तीन पद्य " प्रदक्षिणा " में पृ. 24, 25 पर उद्धृत हैं ।[1] प्रदक्षिणा का सारा युद्ध वर्णन " साकेत " से लिया गया है. कवि ने " साकेत " के एकादश सर्ग के चौहत्तर छंद, अष्टमसर्ग का एक छंद और पंचवटी के तीन छंद लिए हैं. अर्थात " प्रदक्षिणा " पंचवटी तथा " साकेत " के एकादश सर्ग का संकलन है.[2]

### " साकेत " की साहित्यिक प्रेरणा

कवीन्द्र रवीन्द्र ने प्राचीन साहित्य में कतिपय नारी-पात्रों की उपेक्षा देखकर " काव्य की उपेक्षिता " नामक एक लेख लिखा था. इस लेख में टैगोर ने वाल्मीकि और भवभूति की ऊर्मिला, प्रियम्वदा, अनसूया तथा चित्रलेखा आदि उपेक्षित नारी पात्रों के प्रति अपना खेद प्रकट किया था. इससे प्रभावित होकर आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने " सरस्वती " में

---

1. प्रदक्षिणा, पृ. 22, 23, तीन पद्य, पंचवटी के पूर्वाभास का उद्धरण.
2. प्रदक्षिणा, पृ. 33 से पृ. 71 तक के 74 पद्य, साकेत एकादश सर्ग पृ. 277 से पृ. 293 तक. चौदह पद्यों के अतिरिक्त सम्पूर्ण अवतरण, शत्रुघ्न और हनुमान के सम्वादों को आख्यान वर्णन के रुप में परिवर्तित किया गया.

" कवियों की ऊर्मिला- विषयक उदासीनता " नामक लेख लिखा था. वाल्मीकि का हृदय क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक का वध देखकर विचलित हो उठा था. वे ही ऊर्मिला को बिलकुल भूल गये. तुलसीदास जी ने भी उसकी उपेक्षा की. माता से मिलने के बाद तुरन्त तुलसीदास जी ने कह दिया-

" गये लषण जहँ जानकि नाथा " उन्होंने भी ऊर्मिला की ओर नहीं देखा . लेकिन भवभूति को उसकी याद आई. जब राम, लक्ष्मण और सीता वन से लौटते हैं तब भवभूति को ऊर्मिला की याद आती है. चित्र में ऊर्मिला को देखकर सीता लक्ष्मण से पूछती है- " इयमप्यपरा का ' " तब लक्ष्मण जी ने उसके चित्र पर हाथ रख दिया.

डा० नगेन्द्र ने " साकेत : एक अध्ययन " में लिखा है - " हम कह सकते हैं कि संस्कृत साहित्य में काव्य यज्ञशाला की प्रान्तभूमि में जो कितनी ही स्त्रियाँ अनाहत होकर खड़ी है, उनमें प्रधान स्थान ऊर्मिला का है. हाय, अव्यक्त वेदना देवी ऊर्मिला एक बार तुम्हारा उदयाचल है और कहाँ अस्ताचल यह प्रश्न करना भी सब लोग भूल गये . "

उपाध्याय जी ने कवियों की ऊर्मिला विषयक उदासीनता से प्रभावित होकर " ऊर्मिला " लघु- प्रबंध रचा . इसके बाद नवीन जी ने अपूर्ण " विस्मृता ऊर्मिला " काव्य लिखा. इनमें " साकेत " का महत्वपूर्ण स्थान है. काव्य के निवेदन में गुप्तजी ने द्विवेदीजी के प्रति इस प्रकार कृतज्ञता प्रकट की है -

" करते तुलसीदास भी कैसे मानस- नाद '
महावीर का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद । "

गुप्तजी को श्री छोटेलालजी बार्हस्पत्य, श्रीयुत श्री कृष्णदास, मुंशी अजमेरी, सियारामशरण आदि से भी " साकेत " के सृजन की प्रेरणा मिली है ।

196

द्विवेदीजी गुप्तजी के गुरु थे. कवि उनके चरणों में बैठकर काव्य-साधना करते थे. गुप्तजी " भारत-भारती ", " जयद्रथ-वध " आदि लिख चुके थे. परन्तु उनकी दृष्टि राम चरित पर थी. जिसमें वे अपनी अखंड तपस्या को समा सके. इस दृष्टि से उन्होंने " ऊर्मिला " का आरंभ किया.

उपाध्यायजी और गुप्तजी दोनों द्विवेदीजी से प्रभावित थे. द्विवेदी जी यह चाहते थे कि हिन्दी में संस्कृत छन्दों का भी प्रयोग किया जाये तथा उपेक्षिताओं की ओर विशेष ध्यान दिया जाये. उपाध्यायाजी ने " प्रिय- प्रवास " के द्वारा संस्कृत छन्दों को प्रधानता दी. जबकि गुप्तजी ने उपेक्षिताओं का आलेखन " साकेत ", " यशोधरा ", " विष्णुप्रिया " आदि रचनाओं में किया। इससे स्पष्ट है कि " साकेत " के सृजन में दो प्रेरणाएँ प्रमुख हैं. वे राम- भक्त होने के कारण राम-चरित लिखना चाहते थे और इसके साथ उपेक्षिता की उपेक्षा भी उन्हें ~~इच्छानुसार " साकेत "~~ पसंद नहीं थी. अर्थात गुप्तजी ने द्विवेदीजी की इच्छानुसार " साकेत " का निर्माण किया और अपनी अंतःप्रेरणा के अनुसार राम-चरित लिखा. " साकेत " में दोनों प्रेरणाओं का निर्वाह हुआ है.

" पंचवटी " और " प्रदक्षिणा " के लिए कवि को " मानस " की रामकथा से ही प्रेरणा मिली है. माँ की प्रदक्षिणा के रुप में लिखी जाने वाली " प्रदक्षिणा " कृति गुप्तजी ने माँ को ही समर्पित की है.

## मौलिकता और आधुनिकता

### पंचवटी

" पंचवटी " का आधार शूर्पणखा प्रसंग है. यह प्रसंग " मानस " से लिया गया है. इस प्राचीन कथानक में भी गुप्तजी की नवीन दृष्टि का परिचय मिलता है. इसकी कथावस्तु में नवीनता का चित्रण हुआ है.

शूर्पणखा को तामसी वृत्ति के कारण ही नहीं परंतु उसके नैशक्रिया कलापों के द्वारा भी उसे निशाचरी के रुप में चित्रित की गई है. " पंचवटी " में लक्ष्मण का आत्मसंताप, शूर्पणखा का उनसे एकांतमिलन और उसकी प्रणय-याचना दोनों की तर्कमयी उक्तिमता, लक्ष्मण की अपेक्षा राम को कोमल समझकर शूर्पणखा उनके प्रति प्रणय याचना करती है. राम और लक्ष्मण दोनों उसके प्रस्ताव को अस्वीकार करते हैं. शूर्पणखा का कथन, उसके कृत्य और उसके उग्र रुप को देखकर लक्ष्मण उसको विरुप कर देते हैं. इस खण्डकाव्य में पारिवारिक उल्लास, देवर-भाभी परिहास, पात्रों की स्वाभाविक चेष्टाएँ, परिस्थितियाँ और मनोभावनाओं का घात प्रतिघात आदि के द्वारा उल्लेख हुआ है. " पंचवटी " में शूर्पणखा के नासिकाच्छेदन के अतिरिक्त सम्पूर्ण प्रसंग में मौलिकता है. तुलसीदासजी ने शूर्पणखा उपाख्यान को राम के वीरत्व- विषयक कार्य के एक प्रासंगिक कथा सूत्र के रुप में चित्रित किया है. गुप्तजी ने इस प्रसंग को लेकर खण्डकाव्य लिखा है. " मानस " में वर्णित पंचवटी -प्रसंग श्रृंगाररस में लिखा गया है. जबकि " पंचवटी " शान्त- श्रृंगार में. इस खण्डकाव्य में कवि का जीवन-दर्शन चित्रित हुआ है. इसके पात्रों में मानवीयता का चित्रण हुआ है. इसमें लक्ष्मण- सीता की विनोद वार्ता, हास्य-व्यंग आदि शुद्ध मानवीय है. गुप्तजी मानते है कि मानवीय पात्र पर ही मनुष्य विश्वास रखते हैं और ऐसे पात्र ही मनुष्य पर अपना प्रभाव जमा सकता है. इसकी कथा, वस्तु-वर्णन, चरित्र- चित्रण आदि मौलिकता लिये हुए हैं. गुप्तजी पुनरुत्थानयुग के कवि है. और उन्होंने अतीत-प्रेम और पाश्चात्य प्रभावों में समन्वय स्थापित किया है. " उन्हें राष्ट्र के उत्थान के लिए मानवता के जिन गुणों का विकास आवश्यक ज्ञात हुआ है सांस्कृतिक चेतना के द्वारा वे उन्हीं का पुनराख्यान करते गए हैं. प्रेम, करुणा, त्याग, अहिंसा. आदि सात्विक वृत्तियों को उत्कर्षित करना उन्हें अभीष्ट है. गुप्तजी ने युग- चेतना और सांस्कृतिक मनोभावना को

समन्वित करने का प्रयास किया है . " [1] इसमें कवि ने लोकतंत्र को महत्व दिया है, जो युगीन प्रभाव के अनुरुप है.

अन्य रामकाव्यों में शूर्पणखा दिन में प्रणय याचना करती है, जबकि " पंचवटी " में अंधकार में, गुप्तजी ने लक्ष्मण को अकेला शूर्पणखा से मिलाया है. उन्होंने दोनों को एक साथ नहीं मिलाया. " पंचवटी " और " मानस " में शूर्पणखा से प्रस्ताव कराया है. लेकिन गुप्तजी का प्रस्ताव अधिक स्वाभाविक है. " मानस " में वह पहले राम से प्रस्ताव करती है. " पंचवटी " में इसका क्रम उलटा है. इसमें लक्ष्मण के अस्वीकार करने पर राम में कोमलता देखकर, उनसे प्रस्ताव करती है. " मानस " में राम के कहने से वह लक्ष्मणजी से प्रस्ताव करती है. तब लक्ष्मण कहते हैं कि " मैं तो दास हूँ. जबकि गुप्तजी के लक्ष्मण एक आदर्श के सहारे उसे राम की ओर लौटाते हैं. वे कहते हैं कि " तुमने पूज्य आर्य को वरा । अतः मेरे लिए तुम पूज्य होकर अग्राह्य हो गई हो. इसी तर्क से फिर राम भी उसे निरुत्तर कर देते हैं " [2] गुप्तजी ने " शूर्पणखा " का नाम तक नहीं बताया. जब वह भयंकर रुप धारण करती है तब उन्होंने कहा -

" देख नखों को ही जँचती थी
वह विलक्षणी शूर्पणखा । " [3]

इस प्रकार कथा में परिवर्तन करना कोई नई बात नहीं हैं. संस्कृत में भवभूति आदि महाकवियों ने अपने कथा- प्रवाहानुकूल कथानक में परिवर्तन किये हैं. वैसा ही गुप्तजी ने भी किया है.

---

1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य, कमलाकांत पाठक, पृ. 310
2. गुप्तजी की काव्य कला- डा० सत्येन्द्र, पृ. 91
3. पंचवटी, पृ. 61

199

पंचवटीकार ने अपने नायक-नायिका, राम और सीता का चित्रण आधुनिक युग के अनुरुप किया है. गुप्तजी ने राम और सीता को देव देवी के रुप में नहीं बल्कि नर नारी के रुप में देखा है. कवि की आराध्या वन में एक सामान्य नारी के रुप में दिखाई देती है. यहाँ स्वावलम्बन को महत्व दिया गया है.

" अपने पौधों में जब भाभी,
भर भर पानी देती हैं,
खुर्पी लेकर आप निराती
जब वे अपनी खेती हैं.
पाती हैं तब कितना गौरव,
कितना सुख, कितना सन्तोष !
स्वावलम्ब की एक झलक पर
न्योछावर कुबेर का कोष ।। " [1]

गुह-निषाद के बारे में कवि का मंतव्य आधुनिक है-

" गुह, निषाद, शवरों तक का मन
रखते हैं प्रभु कानन में,
क्या ही सरल वचन रखते हैं
इनके भोले आनन में !
इन्हें समाज नीच कहता है
पर हैं ये भी तो प्राणी,
इनमें भी मन और भाव हैं
किन्तु नहीं वैसी वाणी ।। " [2]

---

1. पंचवटी, पृ. 17.
2. वही, पृ. 16.

सAकेत
----

गुप्तजी ने प्राचीन राम-कथा में अनेक मौलिक उद्भावनाएँ की हैं. गुप्तजी ने इस काव्य का आरंभ लक्ष्मण और ऊर्मिला के प्रेमालाप से किया है. संवाद सरल एवं सरस हैं. इनमें लक्ष्मण ऊर्मिला के त्याग को महत्व प्रदान किया गया है. साथ ही इसमें ऊर्मिला और भरत की साधनामयी जीवनी का चित्रण हुआ है. इस महाकाव्य में साधु भरत को नायक और वियुक्ता ऊर्मिला को नायिका बनाया है. कवि का यह कार्य महाकाव्य की पद्धति के विरुद्ध है. यहाँ साहित्यिक मौलिकता ही नहीं लेकिन सम्पूर्ण जीवन दर्शन की एक क्रान्तिकारी झलक देखने को मिलती है. " साकेत " में चित्रित ऊर्मिला और भरत के चरित्र नितान्त नवीन नहीं हैं, किन्तु राम और सीता के स्थान पर भरत और ऊर्मिला के जीवन-सूत्रों से कथा तन्तु का निर्माण साहित्यिक इतिहास में एक प्रवर्तन है और विचारों की दुनिया में एक अभिनव क्रान्ति. इस नवीनता को यदि " साकेत " में प्रतिष्ठित आधुनिकता की आत्मा कहा जाय, तो कुछ भी अनुचित न होगा. " [1] साकेतकार ने प्रेम-कथा नहीं बल्कि अभिनव रामकथा लिखी है. जिसमें कवि ने मानस अथवा वाल्मीकि रामायण के उपेक्षित प्रसंगों को विस्तार दिया है. यथा लक्ष्मण ऊर्मिला के प्रेममय जीवन की कथा, कैकेयी का मनोवैज्ञानिक चरित्रांकन, नवम सर्ग में ऊर्मिला का विरह निवेदन, साकेतपुरी को ही समस्त रामकथा का संगम स्थल रखना, लक्ष्मण-शक्ति और राम-रावण- युद्ध के समाचार सुनकर समस्त साकेत समाज का रणोद्यत होना तथा ऊर्मिला का वीरत्व, वशिष्ठजी का योग- शक्ति के द्वारा अयोध्यावासियों को राम- रावण- युद्ध का दृश्य दिखाना आदि. " [2] चित्रकूट में लक्ष्मण- ऊर्मिला का क्षणिक मिलन होता है. इस काव्य में हनुमान जी संजीवनी बूटी लेने के लिए कैलाश नहीं जाते, लेकिन उनको यह अयोध्या

---

1. आधुनिक साहित्य, नन्ददुलारे वाजपेयी, पृ. 99.

2. हिन्दी के आधुनिक पौराणिक महाकाव्य, देवीप्रसाद गुप्त, पृ. 60

201

में भरत से ही प्राप्त हो जाती है. भरत को यह बूटी साधु ने दी थी.

" मानस " की सीता तुलसीदासजी की आराध्या है. उन्होंने एक स्थान पर लिखा है कि सीताजी स्वयं ही अपने गृह की परिचर्या करती थी. किन्तु यह बात भी ऐसे प्रसंग में कही गई है जो उन्हें सामान्य जीवन भूमिका पर नहीं आने देती. गुप्तजी ने सीता का चित्रण देवी के रुप में नहीं बल्कि आधुनिक युग की सजग नारी के रुप में किया है. गुप्तजी सीता को स्वावलम्बिनी बनाना चाहते थे. इसीलिए उनके हाथ में तकली के साथ खुरपी और कुदाली भी दी है. उनकी सीता कहती है -

" औरों के हाथों यहाँ नहीं पलती हूँ,
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ ।
श्रमवारि विन्दुफल स्वास्थ्य शुक्ति फलती हूँ,
अपने अंचल से व्यजन आप झलती हूँ ।
तनु- लता- सफलता- स्वादु आज ही आया,
मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया । " [1]

उपरोक्त पंक्तियाँ नवीन जीवन दृष्टि की परिचायक है. ऊर्मिला और लक्ष्मण के संवादों में मानवोचित साधारणता व्यक्त हुई है.

उन्होंने ऐसे राम का स्वरुप प्रस्तुत किया है जो आज के युग में भी उपादेय हो सकता है. वे पृथ्वी को महत्व देते हैं. वे स्वर्ग को संदेश देना नहीं चाहते हैं. वरन इस धरती को ही स्वर्ग बनाना चाहते हैं.

" मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
जन- सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया ।
सुख- शान्ति-हेतु मैं क्रांति मचाने आया ।
xx x x

---

1, साकेत, पृ. 223

भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया ।
सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया । "[1]

साकेत में राम मानवता की साकार मूर्ति बनकर अवतीर्ण हुए है. वे एक उच्चकोटि के मानव हैं. साकेतकार ने शताब्दियों से कलंकिता कैकेयी के कलंक को प्रक्षालित करने का सफल प्रयास किया है. चित्रकूट की सभा में सभी कैकेयी को एक स्वर से धन्य कहते है. एक प्रकार से " साकेत " की रचना का मुख्य प्रयोजन उपेक्षिता ऊर्मिला का चरित्रोद्धार होते हुए भी इष्टदेव का गुणगान, भारतीय संस्कृति की महान परम्पराओं, युगीन समस्याओं एवं मानवतावादी जीवनादर्शों की प्रतिष्ठा " साकेत " की सर्जना के महत्वपूर्ण बिन्दु रहे हैं. " अध्यात्म रामायण " की कौशल्या को कैकेयी के प्रति क्रोध है. " साकेत " की कौशल्या अपने पति की सेवा सुश्रुषा करती है. और वह पति को कष्ट पहुँचाना नहीं चाहती है. वह उन्हें शान्त करने का प्रयत्न करती है. कवि ने " अध्यात्म रामायण " का तत्वज्ञान ग्रहण नहीं किया है. बल्कि " अध्यात्म रामायण " की कथावस्तु से अधिक लाभ उठाया है. कवि ने स्वयं आधुनिक युग की नारी विषयक उच्चता की भावना से प्रेरित होकर ऊर्मिला, कैकेयी, मांडवी आदि उपेक्षिता अथवा अनुज्ज्वल नारी पात्रों को चारित्रिक उत्कर्ष प्रदान किया है.

किसी भी काव्य की आधुनिकता उसके ऐतिहासिक निर्माण क्रम की परिधि में देखी जाती है. " साकेत " और " मानस " की आधारभूमि की तुलना करने से " साकेत " की आधुनिकता का स्पष्ट प्रमाण मिलता है. " साकेत " का शत्रुघ्न अधिक क्रियाशील है. गुप्तजी रावण में भी भव्यता देखते हैं. एक बार तो राम भी रावण को अपने से अधिक सहृदय मानते हैं.

---

1. साकेत, पृ. 234-35

203

" वाल्मीकि रामायण " में राजा दशरथ की कोई भी पत्नी सति होने की बात नहीं कहती है. इस क्षति की पूर्ति " साकेत " में की है. साकेत में भी युगीन क्रिया नहीं होती है. लेकिन इससे राजा दशरथ का गौरव बढ़ता है. इसमें राम जैसे धीरोदात्त पात्र को नायक नहीं बनाया बल्कि उसके स्थान पर मानवीय भावों की योजना की गई है. इसमें कृत्रिम आधुनिकता का उल्लेख भी हुआ है. जब राम अयोध्या से विदा होकर जाते हैं तब जनता उनके मार्ग को रोक कर खड़ी हो जाती है और अवज्ञा करती है. ऊर्मिला गांधीजी की तरह सैनिकों को अहिंसा की शिक्षा देती है. गांधीजी ने सत्य, अहिंसा, आस्तिकता, नीति- मूलक धार्मिक आचरण, सामाजिक दृष्टि से रामराज्य के आदर्शों को साकार किया है. गुप्तजी के काव्य में भी ये विचारधाराएँ पाई जाती हैं. " साकेत " की सीता कोलभिल्ल बालाओं को भी प्रेमपूर्वक कातना बुनना सिखाती है. गुप्तजी की सीता गांधी दर्शन से प्रभावित दिखाई देती है. जब राम वनगमन करते है तब प्रजा उनके रथ के आगे लेट जाती है. यहाँ भी सत्याग्रह आन्दोलन की भावना प्रकट हुई है. " साकेत " के राम गांधीजी की भाँति शापित और पीड़ितों का दुःख दूर करने के लिए तैयार रहते हैं. उनमें अपरिग्रह की भावना व्यक्त हुई हैं. राम कहते है -

" मैं यहाँ जोड़ने नहीं, बांटने आया । " [1]

कवि ने मानव में ईश्वरत्व की प्रतिष्ठा की है. फिरभी वे ईश्वर को भूल नहीं पाये हैं. वे मनुष्य के पुरुषार्थ को महत्व देते हैं. किन्तु वे भाग्य और प्रारब्ध पर भी श्रद्धा रखते हैं. राम और सीता अवतारी न होकर मानव है. नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं कि " साकेत में प्रथमबार मानव का उत्कर्ष अपनी चरमसीमा पर ईश्वर के समकक्ष लाकर रखा गया है, जो मध्ययुग में किसी प्रकार सम्भव न था. साकेत इसी कारण हिन्दी की प्रथम

---

1. साकेत, पृ. 234

मानवतादर्शवादी या आदर्श मानवतावादी रचना कही जा सकती है । "[1]
इसकी रचना ब्रज और पुरानी हिन्दी में नहीं बल्कि नई खड़ीबोली में
की गई है.

प्रदक्षिणा

इसकी कथावस्तु का दो तिहाई अंश " साकेत " और " पंचवटी " का संकलन मात्र हैं. " साकेत " में प्रथमबार मानव का उत्कर्ष ईश्वर के समकक्ष लाकर रखा गया है. इसीसे " प्रदक्षिणा " के पात्रों में भी मानवता दिखाई पडती है. इसके पात्रों में भी आधुनिकता का निरुपण हुआ है. इसके राम भी मानव है. वनगमन के समय -

" किन्तु राम की उज्ज्वल आँखें
सफल सीप- सी भर आई । "[2]

राम एक देवता न होकर मानव मात्र ही है.

" साधु भरत का अग्रज हूँ मैं,
यही राम का परिचय हो,
इससे अधिक लोक-जीवन में,
भरत, तुम्हारी क्या जय हो । "[3]

सीता भी एक साधारण नारी के समान कहती है -

" इसी जन्म के लिए नहीं है
राम-जानकी का सम्बन्ध "[4]

गुप्तजी ने राम, सीता तथा लक्ष्मण के जीवन में स्वावलम्बन और

1. आधुनिक साहित्य, नन्ददुलारे वाजपेयी, पृ. 97
2. प्रदक्षिणा, पृ.25
3. वही, पृ. 32
4. वही, पृ. 56

श्रम की प्रतिष्ठा की है. अतएव " प्रदक्षिणा " भी गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है.

इस काव्य में कवि ने रामराज्य की प्रतीक कल्पना को सार्थकता प्रदान की है -

" निर्मम होकर भी निज पुत्र की
मर्यादा प्रभु ने रक्खी,
जीवन का मधु दिया जनों को,
कटुता आप यहाँ चक्खी ।
रक्षक मात्र रहे वे राजा,
राज्य प्रजा ने ही भोगा,
हुआ यहाँ तब जो जन- रंजन
वह कब और कहाँ होगा ? " [1]

गांधीजी के समान ही राम शत्रु के भाई विभीषण को भी अपना बन्धु मानते हैं.

" वैरी का भाई था, फिर भी
प्रभु ने बन्धु- समान लिया,
उसको शरणागत विलोककर
हित से समुचित मान दिया । " [2]

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते है कि कवि ने इस कृति के सृजन के लिए " मानस ", " साकेत " और " पंचवटी " सभी को अपनी दृष्टि के समक्ष रखा है. फिरभी यह कृति अपनी निजी विशेषता रखती है इसमें संदेह नहीं .

---

1. प्रदक्षिणा, पृ.76
2. वही, पृ. 61

206

अभिव्यक्ति पक्ष
=:=:=::-=:-

भाषा
---

कवि की तीव्र अनुभूतियों की अभिव्यक्ति सक्षम भाषा के माध्यम से होती है. " गुप्तजी के काव्य-क्षेत्र में उतरते समय काव्य- भाषा खड़ीबोली निर्धारित हो चुकी थी. किन्तु काव्य भाषा के लिए जो कोमल मसृणता एवं समृद्धि अपेक्षित है, वह उसमें नहीं आ पाई थी. " [1] अर्थात् गुप्तजी के सामने यह प्रश्न था कि काव्योपयोगी भाषा किसे बनाया जाय ? इस दिशा में द्विवेदीजी ने गुप्तजी के गुरु एवं मार्ग- निर्देशक का काम किया. गुप्तजी खड़ीबोली के स्रष्टा एवं उन्नायकों में से एक हैं. काव्य भाषा में उसकी प्रतिष्ठा और परिपक्वता में गुप्तजी का हाथ था, पर उससे भी अधिक श्रेय गुप्तजी को इसलिए है कि उन्होंने खड़ीबोली को " प्राणवान " कर दिया.

" रंग में भंग " से " पंचवटी " तक का समय उनकी भाषा का प्रयोग काल है. " पंचवटी " के बाद लिखी गई रचनाओं में भाषा का उत्तरोत्तर विकास हुआ है.

" पंचवटी " का काव्य-शिल्प पूर्ववर्ती रचनाओं से श्रेष्ठ है. इस कृति में कवि ने सहज, सरल भाषा के माध्यम से रुपचित्र, भावचित्र एवं कलात्मक चित्रों की नियोजन की है. प्रारम्भिक रचनाओं में जो स्थूल वर्णनात्मकता, नीतिमत्ता, उपदेशात्मकता थी. उसका इस कृति में नितान्त अभाव है. यहाँ कवि की भाषा भाव के अनुरुप है. कवि ने शूर्पणखा की भयानकता का वर्णन " भिड़ों के छत्तों से " , " लत्तों से ", " वराह की दाढ़ों से " आदि उपमानों के द्वारा किया है. इन शब्दों के द्वारा उसके बाह्य विकृत

---

1. मैथिलीशरण गुप्त और वल्लतोल का तुलनात्मक अध्ययन, डा० के० एस० मणि, पृ. 233

रुप को साकार कर दिया है. पंचवटीकार ने इस कृति में वातावरण के अनुरुप शब्दावली की योजना की है. जिससे उनका भाषाधिकार का परिचय मिलता है. खड़ीबोली के उत्कर्ष में " पंचवटी " का स्थान महत्वपूर्ण है.

" साकेत " की भाषा शिल्प की दृष्टि से उत्कृष्ट है. इसमें कवि ने भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग किया है. जिससे काव्य अभिव्यंजनात्मक सौष्ठव एवं भाव प्रेषणीयता की दृष्टि से उत्कृष्ट बन पड़ा है. कवि ने इसमें छायावादीयुगीन प्रतीकात्मक शब्दों का भी प्रयोग किया है -

" जीवन के पहले प्रभात में आंख खुली जब मेरी,
हरी भूमि के पात पात में मैंने हृदयगति हेरी ।

यहाँ कवि ने शैशव के लिए " जीवन का पहले प्रभात ", होश सम्भालने के लिए " आंख खोलने " आदि प्रतीकात्मक शब्दों का प्रयोग किया है. इसके अलावा अन्यत्र कवि ने यौवन को " मध्याहन ", वृद्धावस्था को " जीवन की संध्या ", शरीर को " वीणा " आदि कहा है. जिससे भाषा अधिक सजीव बन पड़ी है. इस प्रबन्ध काव्य की भाषा स्वतः सरल होती गई है. यहाँ पूर्ववर्ती अनुप्रास पदावली के प्रति कवि को मोह नहीं रहा है. वैसे तो " साकेत " में कवि ने संस्कृत के अनेक शब्दों का प्रयोग किया है. जैसे- " सालाघव ", " घनालिंगता ", सपरागाम्बुजता, आभरणवरण युक्त आदि. " विरुपाक्ष ", " तापिच्छ ", " जिष्णु ", " आनुगत्य ", " प्रावरण आदि संस्कृत के अप्रचलित शब्द है. " मचिया ", ठौर ", " ढाँप ", " सेंत- मेंत टुकुर-टुकुर " आदि देशज शब्दों का भी प्रयोग किया है. " साकेत " खड़ीबोली की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कृति है. शब्दों की उचित योजना के द्वारा उन्होंने भाषा में चित्रोपमता, लाक्षणिकता, दृश्य विधान आदि की नियोजना की है. प्रवाहात्मक अभिव्यंजनात्मक शैली, देशज एवं प्रान्तीय शब्द और नव्यतम छन्दों का प्रसंगानुकूल प्रयोग कवि की

कलात्मक निपुणता के जीवंत प्रमाण है. " सब मिलाकर " साकेत " खड़ीबोली की सर्वश्रेष्ठ कृति है जिसमें भाषागत शुक्ति और शक्ति का समावेश है. " [1]

" प्रदक्षिणा " की भाषा कान्तिमयी, टकसाली एवं समासगुण युक्त है.

मुहावरें

महारानी कैकेयी ने राम को वनवास देकर अपने पुत्र भरत को राज्य देना चाहा था. महारानी की इच्छा थी-

" निर्वासित कर आर्य राम को
अपनी जड़ें जमा लूँगी । " [2]

शूर्पणखा प्रथम सीता की देवरानी और बादमें सौत बनने के लिए तैयार हुई. तब सीता ने कहा -

कहते हैं इसको ही- अँगुली
पकड़ प्रकोष्ठ प्रकड़ लेना । " [3]

इसके अलावा कृतार्थ होना, पत्थर पिघलना, हृदय हिलना, मुहावरों का भी " पंचवटी " में सफल प्रयोग हुआ है .

" साकेत " में सीता राम के साथ रहना चाहती है. चाहे वे महल में हो या वन में. वे संकट से भागना नहीं चाहती.

" संकट में अब मुँह फेरूँ । " [4]

सुमन्त्र राम को वन में छोड़कर आते हैं. तब उनसे पूछा जाता है कि राम नहीं लौटे ? प्रत्युत्तर में वे भावविव्हल हो जाते हैं और उनका गला

---

1. कविवर मैथिलीशरण गुप्त और साकेत, डा० व्रजमोहन शर्मा, पृ. 50
2. पंचवटी, पृ. 10
3. वही, पृ. 53
4. साकेत, पृ. 117

209

भर आता है.

" भर आया सूखा हुआ गला, "[1] आर्य, छाती फट रही है हाय,"[2]
" ले,तेरे, कंटक टले सभी, "[3] लगे इस मेरे युद्ध में आग, "[4]
" द्विजिव्हे, रस में विष मत घोल, "[5] व्रज- सा पड़ा अचानक टूट, "[6] " क्यों न काँटों में घसीटोगे मुझे "[7] आदि अनेक मुहावरों का प्रयोग मिलता है.

" प्रदक्षिणा " में जब मिथिलाधिप ने कहा कि क्या जगत में कोई ऐसा नहीं है कि जो इस धनुष को चढ़ा सके. यह सुनकर लक्ष्मण क्रोध में आ जाते हैं.

" चढ़ी भृकुटियाँ प्रकटित करके
कि यों चाप चढ़ होगा भंग । "[8]

" दस्यु- राज यों ध्वस्त हुआ, "[9] " दाँत पीसकर, ओंठ काटकर करता था वह क्रुद्ध प्रहार, "[10] आदि अनेक मुहावरों का प्रयोग मिलता है.

---

1. साकेत, पृ. 175
2. वही, पृ. 203
3. वही, पृ. 177
4. वही, पृ. 46
5. वही, पृ. 47
6. वही, पृ. 65
7. वही, पृ.31
8. प्रदक्षिणा, पृ. 17
9. वही, पृ. 38
10. वही, पृ. 65

210

लोकोक्तियाँ
:-=:-=:-=

" पंचवटी " में लक्ष्मण शूर्पणखा के प्रस्ताव का इन्कार करते हैं तब सीता कहती है कि कोई आई हुई लक्ष्मी को छोड़ते नहीं है.

" और नहीं तो आई लक्ष्मी
कौन छोड़ने वाला है ' " [1]

" मिट्टी में मिल गई अन्त में
जिससे सोने की लंका । " [2]

" साकेत " की सीता वन में भी महल की तरह रहती है. उसके लिए तो " जंगल में भी मंगल है " [3], किसने सोता हुआ यहाँ का सर्प जगाया "[4] " सच को किस ओर आँच है " [5] " सब सुधर्म पर मरते हैं " [6] " एक एक दो हुए, जिन्हें एकादश जानो " [7] " अब दिन पर दिन गिनो और रजनी पर रजनी " [8] आदि अनेक लोकोक्तियाँ का प्रयोग हुआ है.

" प्रदक्षिणा " में " पुत्र नहीं तुम अरि अनुदार । " [9]
पंजर भग्न हुआ, पर पंछी
अब भी अटक रहा है आर्य । " [10]

आदि का प्रयोग हुआ है.

---

1. पंचवटी, पृ. 47
2. वही, पृ. 64
3. वही, पृ. 1/8 [साकेत] पृ. ११८
4. वही, [साकेत] पृ. 463
5. साकेत, पृ. 364
6. वही, पृ. 421
7. वही, पृ. 463
8. वही, पृ. 308
9. प्रदक्षिणा, पृ. 22
10. वही, पृ. 73

211

सूक्तियाँ
:=:=:-

" पंचवटी " में वहाँ की तपोभूमि के कारण हिंस्त्र पशु सिंह ने भी अपना हिंसक स्वभाव छोड़ दिया है. इसी प्रकार से बड़े सदा बड़े ही होते हैं और छोटे छोटे ही रहते हैं.

" सिंह और मृग एक घाट पर
आकर पानी पीते हैं । " [1]

" बड़े सदैव बड़े होते हैं,
छोटे रहते हैं छोटे । " [2]

" साकेत " में महारानी कैकेयी कहती है कि परम्परा से यह बात चली आ रही है कि

" माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही । " [3] लेकिन आज पुत्र ने परम्परा उलट दी है. इसलिये

" है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता " [4] जैसी इच्छा, पर रहे नियत ही मात्रा " [5] तूने तो सहधर्मचारिणी के भी ऊपर धर्मस्थापन किया भाग्यशालिनी, इस भू पर " [6] आदि सूक्तियों का भी प्रयोग हुआ है.

" प्रदक्षिणा " में लक्ष्मण राम के साथ वन जाते हैं. वे उनके बिना रहना नहीं चाहते हैं. इसीलिये कहते हैं -

---

1. पंचवटी, पृ. 15
2. वही, पृ. 51
3. साकेत, पृ. 249
4. वही, पृ. 249
5. वही, पृ. 263
6. वही, पृ. 495

" तुम मेरे सर्वस्व जहाँ । " [1]

सीता-स्वयंवर में कोई धनुष को उठा नहीं पाया तब मिथिलेश्वर ने कहा कि क्या धरती आज वीर विहीन हो गई है -

" वीर-विहीन हो गई वसुधा,
आज हो गया मुझको ज्ञात । " [2]

आदि अनेक सूक्तियों का प्रयोग हुआ है.

## संवाद- योजना

गुप्तजी के काव्य में संवादों का महत्वपूर्ण स्थान है.

" पंचवटी " में लक्ष्मण- शूर्पणखा संवाद की योजना सिद्धान्त पोषण के लिए हुई है.

" केवल इतना कि तुम कौन हो ? "
बोली वह- " हा निष्ठुर कान्त !
यह भी नहीं - " चाहती हो क्या, "
कैसे हो मेरा मन शान्त ?
मुझे जान पड़ता है, तुमसे
आज छली जाऊँगी मैं,
किन्तु आ गई हूँ जब तब क्या
सहज चली जाऊँगी मैं ? " [3]

" साकेत " में स्वगत- संवाद भी रोचक,सरस एवं आकर्षक है.

" बोली वे हँसकर- " रह तू,
यह न हँसी में भी कह तू ।

1. प्रदक्षिणा, पृ. 24
2. वही, पृ.16
3. पंचवटी, पृ. 26

213

तेरा स्वत्व भरत लेगा ?
वन में तुझे भेज देगा ?
वही भरत जो भाता है,
क्या तू मुझे डराता है ?
लक्ष्मण ! यह दादा तेरा,
धैर्य रखता है मेरा ! " [1]

संवादों में वचन-चातुरी या प्रत्युत्पन्नमतित्व भी देखने को मिलता है-

ऊर्मिला बोली- " अजी, तुम जग गये ?
स्वप्न निधि से नयन कब से लग गये ? "
मोहिनी ने मन्त्र पढ़ जब से छुआ,
जागरण रुचिकर तुम्हें जब से हुआ । " [2]

" साकेत " के अष्टम सर्ग में राम और सीता के संवादों की योजना सिद्धान्त पोषण के लिए हुई है.

लक्ष्मण तथा राम का तर्क- वितर्क देखिये-

लक्ष्मण- जब आप पिता के वचन पाल सकते हैं,
तब माँ की आज्ञा भरत टाल सकते हैं ? "
राम- " माता का चाहा किया राम ने आहा !
तो भरत करेंगे क्यों न पिता का चाहा'! [3]

निम्न संवाद में वचन-वक्रत्व तथा सूक्तिमयता का आभास मिलता है-

" मेरे उपवन के हरिण, आज वनचारी,
मैं बाँध न लूँगी तुम्हें, तजो भय भारी । "

× × ×

---

1. साकेत, पृ. 97
2. वही, पृ. 29-30
3. वही, पृ. 238

214

" वन में तनिक तपस्या करके
बनने दो मुझको निज योग्य,
भाभी की भगिनी, तुम मेरे,
अर्थ नहीं केवल उपभोग्य । " [1]

" प्रदक्षिणा " के संवाद संक्षिप्त एवं सजीव है.

सीता बोली कि " ये पिता की
आज्ञा से सब छोड़ चले,
पर देवर, तुम त्यागी बनकर
क्यों घर से मुँह मोड़ चले ? "
उत्तर मिला कि " आर्य्ये बरबस
बना न दो मुझको त्यागी,
आर्य-चरण-सेवा में समझो
मुझको भी अपना भागी । "
क्या कर्तव्य यही है भाई ? "
लक्ष्मण ने सिर झुका लिया -
आर्य, आपके प्रति इस जन ने
कब कब क्या कर्तव्य किया ? "
प्यार किया है तुमने केवल । "
यह कह सीता मुसकाई । " [2]

रस योजना

गुप्तजी की रचनाओं में श्रृंगार, करुण, शान्त और वीर रस का विशेष रुप से तथा हास्य, अद्भुत, रौद्र, वीभत्स और भयानक का सामान्य रुप से निरुपण हुआ है. " पंचवटी " में शूर्पणखा के विकृत और वीभत्स रुप

1.साकेत, पृ. 265

2. प्रदक्षिणा, पृ. 25

215

से सीता में भय उत्पन्न होता है जो आलम्बन है -

" भय विस्मय से उसे जानकी,
देख न तो हिल-डोल सकीं,
और न जड़ प्रतिमा- सी वे कुछ
रुद्ध कण्ठ से बोल सकीं ।। "[1]

निम्न उदाहरण पर स्त्री मिलन के समय लक्ष्मण की धर्मवीरता का है -

" चण्डि, क्या कहूँ, तुमसे, मेरी
ममता कितनी कच्ची है ।
माता, पिता और पत्नी की,
धन की, धाम-धरा की भी,
मुझे न कुछ भी ममता व्यापी,
जीवन परम्परा की भी । "[2]

पंचवटी-प्रसंग में शूर्पणखा का रात्रि के एकान्त में आगमन विस्मयकारी है -

" फिर आँखें खोलें तो यह क्या
अनुरुप रुप, अलौकिक वेश ।
चका चौंध सी लगी देखकर
प्रखर ज्योति की वह ज्वाला,
निस्संकोच खड़ी थी सम्मुख
एक हास्यवदनी बाला । "[3]

शूर्पणखा का रात्रि के एकांत में आना, उसका अनुपम सौन्दर्य और उसके अलौकिक प्रसाधन को देखकर मन विस्मयाभिभूत हो जाता है.

---

1. पंचवटी, पृ. 61
2. वही, पृ. 24
3. वही, पृ. 20

साकेत - संयोग श्रृंगार

" बन पड़ी है आज तो ! " उसने कहा -
" क्या करूँ, बस में न मेरा मन रहा ।
हारकर तुम क्या मुझे देते कहो ?
मैं वही हूँ, किन्तु कुछ का कुछ न हो । "
हाथ लक्ष्मण ने तुरन्त बढ़ा दिये,
और बोले- " एक परिरम्भण प्रिये । "
सिमिट- सी सहसा गई प्रिय की प्रिया,
एक तीक्ष्ण अपांग ही उसने दिया ।
किन्तु घाते में उसे प्रिय ने किया,
आप ही फिर प्राप्य अपना ले लिया । " [1]

यहाँ लक्ष्मण आश्रय है, ऊर्मिला आलम्बन है और उर्मिला का सौन्दर्य तथा उसकी बातें उद्दीपन विभाव हैं. उर्मिला का सिमटना, सकुचाना आदि अनुभाव है. आवेग, चपलता, लज्जा, हर्ष आदि संचारी भाव हैं, इनसे स्थायीभाव परिपुष्ट होकर संयोग श्रृंगार में परिणत होता है.

वियोग श्रृंगार

आधुनिक राम-काव्य में वियोग श्रृंगार का अधिक प्रयोग हुआ है. इसके चार प्रकार है- पूर्वराग, मान, प्रवास और करुण . " साकेत " में प्रवास-जन्य विप्रलम्भ श्रृंगार का ही निरुपण है-

नंगी पीठ बैठकर घोड़े को उड़ाऊँ कहो,
किन्तु डरता हूँ मैं तुम्हारे इस झूले से ,
रोक सकता हूँ ऊरुओं के बल से ही उसे,
टूटे भी लगाम यदि मेरी कभी भूले से ।
किन्तु क्या करुँगा यहाँ ? उत्तर में मैंने हँस
और भी बढ़ाये पैंग दोनों ओर ऊले-से,

---

1.साकेत, पृ. 40

217

" हैं- हैं " कह लिपट गये थे यहीं प्राणेश्वर,
बाहर से संकुचित, भीतर से फूले- से । " [1]

यहाँ उर्मिला आश्रय है, वनवासी लक्ष्मण आलम्बन और वर्षा काल, घन-गर्जन, झूला आदि उद्दीपन हैं. लक्ष्मण- उर्मिला को " हैं- हैं " कर लिपट जाता है. संकुचित हो जाता है, भीतर से प्रफुल्लित होता है. ये अनुभाव है और स्मृति, लज्जा, व्याधि, आवेग जैसे संचारी हैं. जिनसे स्थायीभाव परिपुष्ट होता है और वह विप्रलम्भ के रुप में परिणत होता है.

" इधर ऊर्मिला मुग्ध निरी-
कहकर " हाय ! " धड़ाम गिरी । " [2]

अन्तर्दशाएँ -

चिन्ता

" यदि स्वामि- संगिनि रह न सकी,
तो क्यों इतना भी कह न सकी-
हे नाथ, साथ दो भ्राता का,
बल रहे मुझे उस त्राता का । " [3]

उद्वेग - " अरे एक मन, रोक थाम तुझे मैंने लिया,
दो नयनों ने, शोक, भरम खो दिया, रो दिया । " [4]

जड़ता- " पैठी है तू बद पदी, निज सरसिज में लीन,
सप्तपदी देकर यहाँ बैठी मैं गति-हीन । " [5]

---

1. साकेत, पृ. 295
2. वही, पृ. 120
3. वही, पृ. 163
4. वही, पृ. 320
5. वही, पृ. 316

218

मरण - " अयि, शक्तिमयी, सँभाल तू,
रख थाती, यह अश्रु पाल तू ।
यदि मैं न रहूँ, नहीं सही,
प्रिय की भेंट बनें यहाँ यही । " [1]

करुण रस - गुप्तजी की रचनाओं में करुण-रस का अधिक निरुपण हुआ है. जब प्रिय मिलन की कोई आशा नहीं रहती और प्रिय की मृत्यु हो जाती है. तब शोक स्थायीभाव उद्बुद्ध होकर करुणरस में परिणत होता है. " साकेत " में दशरथ मरण प्रसंग में करुण रस की व्यंजना हुई है -

" बस, यही दीप-निर्वाण हुआ,
सुत-विरह वायु का बाण हुआ ।

× × ×

अर्द्धांग रानियाँ शोककृता,
मूर्च्छिता हुई या अर्द्ध-मृता
हाथों से नेत्र बन्द करके,
सहसा यह दृश्य देख डरके,
" हा स्वामी ! " कह ऊँचे रव से,
दहके सुमन्त्र मानो दव से ।

× × ×

थे भूप सभीके हितकारी,
सच्चे परिवार- भार- धारी । " [2]

यहाँ राजा दशरथ की मृत्यु आलम्बन है. रानियाँ, अनुचर, सुमंत आश्रय हैं, राजा दशरथ का हितकारी होना, परिवार-प्रेमी होना आदि उद्दीपन हैं. राज-परिवार, रानियाँ, सुमंत्र, अनुचर का विलाप, उनका हाहाकार या तो अनाथ होकर रोना ये सब अनुभाव हैं. स्मृति, चिन्ता,

---

1. साकेत, पृ. 386
2. वही, पृ. 178-79

219

व्याधि, मोह, विषाद, जड़ता संचारी भाव है. इन विभावानुभाव एवं संचारी भावों से पुष्ट होकर शोक नामक स्थायीभाव करुण रस में परिणत होता है.

रौद्र रस

" मची खलबली गली गली में लंकापुर की,
आँखों में आ झाँक उठी आतुरता उर की ।
आया रावण जिधर दिव्य- रथ में राघव थे,
क्या ही गौरव भरे आज प्रभु- कर- लाघव थे ।
गरजा- राक्षस - " ठहर, ठहर, तापस, मैं आया,
जीकर तेरा शोक- मात्र लक्ष्मण ने पाया ।
पंचानन के गुहा- द्वार पर रक्षा किसकी ?
मैं तो हूँ विख्यात दशानन, सुध कर इसकी । " [1]

इन पंक्तियों में राम आश्रय है. यहाँ रावण आलम्बन है. लक्ष्मण मूर्च्छा से जाग्रत होते हैं और पुनः आक्रमण करते हैं. जिससे लंका में खलबली मच जाती है. रावण का गरजना, क्रोध प्रकट करना, राम को ललकारना और अपनी प्रशंसा आदि अनुभाव है और आवेग, उग्रता, मद, असूया, उद्वेग, गर्व आदि संचारी हैं. इनसे क्रोध स्थायीभाव पुष्ट होता है और रौद्र रस परिणत होता है.

भयानक रस

निम्न छंद में भयानक रस की व्यंजना हुई है-

" दीख पड़ते हैं न सादी आज,
गज न लाते हैं निषादी आज,
फिर रही गायें रँभाती दूर,
भागते हैं श्लथ- शिखण्ड मयूर ।

× × ×

---

1. साकेत, पृ. 482

220

क्या हुआ सन्ध्यार्घ्य का वह ठाठ ?
सुन नहीं पड़ता कहीं श्रुति- पाठ ?
× । × ×
धड़कता है किन्तु मेरा चित्त,
भड़कता है भावना का पित्त ।
निकट हो दिनरात- सन्धि सहर्ष,
किन्तु जँचता है मुझे संघर्ष । "[1]

यहाँ भरत आश्रय है. राजा दशरथ की मृत्यु आलम्बन है. उनकी मृत्यु होने पर अयोध्या में शून्यता एवं निर्जनता छा जाती है. यह उद्दीपन है. भरत के हृदय में आशंकायें उठना, उनके शरीर का जलना, चित्त का धड़कना, पित्त का भड़कना आदि अनुभाव हैं . और शंका, चिन्ता, आवेग, त्रास आदि संचारी हैं. इन सभी से भय स्थायी भाव परिपुष्ट होकर भयानक रस के रुप में व्यंजित होता है.

हास्य रस

" साकेत " में इसके लिए अवकाश नहीं है. फिरभी गुप्तजी ने चित्रकूट प्रसंग में इस रस की योजना की है-

"जाबालि जरठ को हुआ मौन दुःसह- सा,
बोले वे स्वजटिल शीर्ष डुलाकर सहसा-
" ओहो ! मुझको कुछ नहीं समझ पड़ता है,
देने को उल्टा राज्य द्वन्द्व लड़ता है ।
पितृ-वध तक उसके लिए लोग करते हैं । "
" हे मुने, राज्य पर वही मर्त्य मरते हैं । "
" हे राम, त्याग की वस्तु नहीं वह ऐसी । "
" पर मुने, भोग की भी न समझिए वैसी । "
" हे तरुण, तुम्हें संकोच और भय किसका ? "

---

1. साकेत, पृ. 185-86

221

" हे जरठ, नहीं इस समय आपको जिसका । "
" पशु-पक्षी तक हे वीर, स्वार्थ-लक्षी हैं । "
" हे वीर, किन्तु मैं पशु न आप पक्षी हैं । " [1]

यहाँ राम आश्रय है और जरठ आलम्बन है. जाबालि जटायुक्त सिर हिलाकर बोलता है, मुनि होकर भी भोग और स्वार्थ का समर्थन करता है. ये उद्दीपन हैं. राम का यह उत्तर " मैं पशु न आप पक्षी हैं " आदि अनुभाव हैं. हर्ष, चपलता, उत्सुकता आदि संचारी भाव हैं. इनसे पुष्ट होकर हास स्थायी हास्य रस की व्यंजना करता है.

सीता उषाकाल में कुटी से बाहर निकलकर एक अपरिचित सुन्दरी को देखते है. तब हास्य रस उत्पन्न होता है.

" सीता ने भी उस रमणी को
देखा, लक्ष्मण को देखा,
फिर दोनों के बीच खींच दी
एक अपूर्व हास्य- रेखा ।
" देवर, तुम कैसे निर्दय हो,
घर आये जन का अपमान,
किसके पर- नर तुम, उसके जो
चाहे तुमको प्राण- समान ' " [2]

आगे वह शूर्पणखा को लक्ष्य कर कहती है -

" अजी, खिन्न तुम न हो, हमारे
ये देवर हैं ऐसे ही । " [3]

इस प्रसंग में सीता का हास्य उनके लक्ष्मण- प्रति संबंध से उद्भूत है. यहाँ रोमांच की प्रधानता है.

---

1. साकेत, पृ. 259
2. पंचवटी, पृ. 40
3. वही, पृ. 41

222

वात्सल्य रस

" अब कटे सभी वे पाश नाश के प्रेरे,
मैं वही कैकयी, वही राम तुम मेरे ।
होने पर बहुधा अर्ध रात्रि अन्धेरी,
जीजी आकर करती पुकार थीं मेरी-
" लो कुहुकिनि, अपना कुहक, राम यह जागा,
निज मँझली माँ का स्वप्न देख उठ भागा । " [1]

यहाँ कैकयी आश्रय है और राम आलम्बन है. राम आधी रात को जागकर भागते हैं जो उद्दीपन है. स्नेह उमड़ना, आनंद का अनुभव करना राम के बालक रुप को " कुहक " समझना आदि अनुभाव हैं और हर्ष, आवेग, औत्सुक्य, स्मृति आदि संचारीभाव हैं. इनसे पुत्र-स्नेह नामक स्थायी भाव पुष्ट होकर वात्सल्य रस की व्यंजना करता है.

" प्रदक्षिणा " में वीर रस का अच्छा परिपाक हुआ है. जब लक्ष्मण को शक्ति लगती है तब राम " अमर्ष " की भावना से युद्ध में प्रचण्ड रुप धारण करते हैं --

" प्रलयानल- से बढ़े महाप्रभु,
जलने लगे शत्रु- तृण- से ।
एक असह्य प्रकाश- पिण्ड था,
छिपी तेज में आकृति आप,
बना आप ही रवि-मण्डल-सा
उगल उगल शर-किरण-कलाप ।
कोप-कटाक्ष छोड़ता था ज्यों
भृकुटि चढ़ाकर काल कराल,
क्षण भर में ही छिन्न- भिन्न - सा
हुआ शत्रु- सेना का जाल ।

---

1. साकेत, पृ. 252

क्षुब्ध नक्र जैसे पानी में,
पर्वत में जैसे विस्फोट,
अरि-समूह में विभु वैसे ही
करते थे चोटों पर चोट । "[1]

बिम्ब- योजना
++++++++++

" निस्संकोच खड़ी थी सम्मुख,
एक हास्यवदनी बाला !
× × ×
थी अत्यन्त अतृप्त वासना
दीर्घ दृगों से झलक रही,
कमलों की मकरन्द- मधुरिमा
मानो छवि से छलक रही । "[2]

यहाँ कवि ने शूर्पणखा के सौन्दर्य का वर्णन किया है. उसके विशाल नेत्रों से मादक-सौरभ फूटने का दृश्य प्रस्तुत किया गया है.

गुप्तजी को प्रकृत- बिम्ब अधिक प्रिय है.

" जिस पर पाले का एक पर्त- सा छाया,
हत जिसकी पंकज-पंक्ति, अचल- सी काया ।
उस सरसी-सी आभरणरहित सितवसना,
सिहरे प्रभु माँ को देख, हुई जड़ रसना । "[3]

यहाँ सादृश्य का सूक्ष्म विधान है. रुप बिम्ब भी आकर्षक है. डा० नगेन्द्र के शब्दों में कहा जा सकता है कि इसमें सादृश्य के कई तत्व हैं. इसीलिए बिम्ब का बड़ा पूर्ण उतरा है.

---

1. प्रदक्षिणा, पृ. 66-67
2. पंचवटी, पृ. 20-21
3. साकेत, पृ. 24।

224

चाक्षुष बिम्ब

" तरु- तले विराजे हुए- शिला के ऊपर,
कुछ- टिके, - धनुष की कोटि टेककर भू पर ।
निज लक्ष्य-सिद्धि-सी, तनिक घूमकर तिरछे,
जो सींच रही थीं पर्णकुटी के बिरछे
उन सीता को, निज मूर्तिमती माया को,
यों देख रहे थे राम अटल अनुरागी,
योगी के आगे अलख- ज्योति ज्यों जागी । " [1]

इस छन्द में राम और सीता का स्वाभाविक चित्र है. जो अपनी भव्यता में अनुपम है. राम का चित्र भी अत्यंत स्वाभाविक, परम मनोहर एवं प्रभावी है. दूसरी पंक्ति में वनवासी राम की मुद्रा का चित्रण किया गया है और सीता बिरछे सींचती है. यहाँ दृश्य- बिम्ब है.

" वह सिंही अब थी हहा गोमुखी गंगा । " [2]

यह " सिंही " शब्द के द्वारा महारानी कैकेयी के कठोर जीवन की ओर संकेत किया गया है. और " गोमुखी गंगा " से उसके परिवर्तित जीवन की ओर संकेत किया गया है. यह बिम्ब विधान अत्यन्त मार्मिक एवं सजीव बन पड़ा है.

" अंचल-पट कटि में खोंस, कछोटा मारे,
सीता माता थी आज नई धज- धारे ।।
अंकुर- हितकर थे कलश- पयोधर पावन,
जन- मातृ-गर्वमय कुशल वदन भव- भावन । " [3]

सीता का सौन्दर्य आकर्षक है. वह उज्ज्वल एवं पावन है. इस छन्द को पढ़कर सौन्दर्य का श्रद्धामय भव्य बिम्ब उपस्थित होता है .

1. साकेत, पृ. 220-21
2. वही, पृ. 247
3. वही, पृ. 221

225

निम्न उदाहरण में घ्रातव्य बिम्ब का आभास होता है -

" शील- सौरभ की तरंगें आ रही,
दिव्य- भाव भवाब्धि में हैं ला रही । "[1]

" प्रदक्षिणा " में कवि ने राम रावण युद्ध का वर्णन करते हुए एक बिम्ब उपस्थित किया है.

" निकले-घुसे घनों में रवि ज्यों,
रह न सके क्षण भर भी रुद्ध ।
शैल-शूल-असि-परशु-गदाघन
तोमर- भिंदिपाल-शर-चक्र,
शोणित बहा रही थीं रण में
विविध सार-धाराएँ वक्र । "[2]
घन घन, झन झन, सन सन निःस्वन
होता था हन हन के साथ । "[3]

## अलंकार विधान

काव्य में रीति, वृत्ति एवं गुण की भाँति अलंकारों का भी प्रमुख स्थान है. अलंकार भाव के उत्कर्ष में सहायक होते हैं. इसके साथ वे वस्तु के रुप, गुण, क्रिया एवं प्रभाव की अनुभूति को भी तीव्र करने में सहायक का कार्य करते हैं. इस दृष्टि से देखा जाय तो अलंकार काव्य का एक अस्थिर धर्म है. जिसके दो भेद हैं काव्य के शब्द सम्बन्धी चमत्कार से युक्त शब्दालंकार और जिसका संबंध अर्थ से है वे अर्थालंकार. गुप्तजी ने दोनों प्रकार के अलंकार का प्रयोग किया है.

---

1. साकेत, पृ. 28
2. प्रदक्षिणा, पृ. 63-64
3. वही, पृ. 64

226

अनुप्रास

" झाँक न झंझा के झोंके में
झुककर खुले झरोखे से । " [1]

पूर्णोपमा

" कटि के नीचे चिकुर- जाल में
उलझ रहा था बाँया हाथ,
खेल रहा हो ज्यों लहरों से
लोल कमल भौरों के साथ । " [2]

रुपक

" जितने कष्ट- कण्टकों में है
जिनका जीवन- सुमन खिला,
गौरव गन्ध उन्हें उतना ही
अत्र-तत्र सर्वत्र मिला । " [3]

सन्देह

" टाँगा धनुष कि कल्पलता पर
मनसिज ने झूला डाला । " [4]

व्यतिरेक

" अहा ! अम्बरस्था ऊषा भी,
इतनी शुचि सस्फूर्ति न थी,
अवनी की ऊषा सजीव थी,
अम्बर की- सी मूर्ति न थी । " [5]

विशेषोक्ति

" जो अन्धे होते हैं बहुधा
प्रज्ञाचक्षु कहाते हैं,
पर हम इस प्रेमान्ध बन्धुको
सब कुछ भूला पाते हैं । " [6]

---

1. पंचवटी, पृ. 36
2. वही, पृ. 21
3. वही, पृ. 15
4. वही, पृ. 21
5. वही, पृ. 37
6. वही, पृ. 55

227

व्याजस्तुति

" जो वर-माला लिए, आप ही,
तुमको वरने आई हो,
अपना तन, मन, धन सब तुमको
अर्पण करने आई हो,
मज्जागत लज्जा तजकर भी,
तिसपर करे स्वयं प्रस्ताव,
कर सकते हो तुम किस मन से
उससे भी ऐसा बर्ताव ? " [1]

पर्याय

" जहाँ लाल साड़ी थी तनु में
बना चर्म का चीर वहाँ । " [2]

यमक

" चित्र भी था चित्र और विचित्र भी,
रह गये चित्ररथ- से सौमित्र भी । " [3]
अंगराग पुरांगनाओं के धुले,
रंग देकर नीर में जो हैं घुले, " [4]

श्लेष

" उस रुदन्ती विरहिणी के रुदन- रस के लेप से,
और पाकर ताप उसके प्रिय- विरह- विक्षेप से " [5]
" प्रिय को था मैंने दिया पद्म- हार उपहार,
बोले- " आभारी हुआ पाकर यह पद-भार । " [6]

---

1. पंचवटी, पृ. 45
2. वही, पृ. 61
3. साकेत, पृ. 34
4. वही, पृ. 21
5. वही, पृ. 269
6. वही, पृ. 300

228

" निचोड़ पृथ्वी पर वृष्टि-- पानी,
सुखा विचित्राम्बर सृष्टि रानी । " [1]

स्मरण
" आलि, इसी वापी में हंस बने वार वार हम विहरे,
सुधकर उन छीटों की मेरे ये अंग आज भी सिहरे । " [2]

रुपक
" सखि, नीलनभस्सर में उतरा
यह हंस अहा ! तरता तरता,
अब तारक-मौक्तिक शेष नहीं,
निकला जिनको चरता चरता ।
अपने हिम- विन्दु बचे तब भी,
चलता उनको धरता धरता,
गढ़ जायँ न कण्टक भूतल के,
कर डाल रहा डरता डरता । " [3]

निरंग रुपक
" भाग्य भास्कर उदयगिरि पर चढ़ गया । " [4]
" राम- सीता, धन्य धीराम्बर- इला,
शौर्य - सह सम्पत्ति, लक्ष्मण- ऊर्मिला । " [5]

परम्परित रुपक
" दास की यह देह तन्त्री तार दे,
रोम-तारों में नई झंकार दे । " [6]

---

1. साकेत, पृ. 297
2. वही, पृ. 288
3. वही, पृ. 286
4. वही, पृ. 18
5. वही, पृ. 18
6. वही, पृ. 17

229

शुद्धापह्नुति

" हंस, हहा ! तेरा भी बिगड़ गया क्या विवेक बन बनके ?
मोती नहीं, अरे, ये आँसू हैं ऊर्मिला जन के । " [1]

कैतवापह्नुति

" पाकर विशाल कच-भार एड़ियाँ धँसती,
तब नखज्योति-मिष, मृदुल अँगुलियाँ हँसती । " [2]

उत्प्रेक्षा

" मेरी दुर्बलता क्या
दिखा रही तू अरी, मुझे दर्पण में ?
देख, निरख मुख मेरा
वह तो धुँधला हुआ स्वयं ही क्षण में । " [3]

वस्तूत्प्रेक्षा

" जान पड़ता नेत्र देख बड़े बड़े -
हीरकों में गोल नीलम हैं जड़े ।
पद्मरागों से अधर मानो बने,
मोतियों से दाँत निर्मित घने । " [4]

तुल्ययोगिता

" राम- भाव अभिषेक- समय जैसा रहा,
वन जाते भी सहज सौम्य वैसा रहा ।
वर्षा हो या ग्रीष्म, सिन्धु रहता वही,
मर्यादा की सदा साक्षिणी है मही । " [5]

निदर्शना

" पास पास ये उभय वृक्ष देखो, अहा !
फूल रहा है एक, दूसरा झड़ रहा । "

---

1. साकेत, पृ. 301
2. वही, पृ. 221
3. वही, पृ. 306
4. वही, पृ.27
5. वही, पृ. 127

230

" हैं ऐसी ही दशा प्रिये, नर लोक की,
कहीं हर्ष की बात, कही पर शोक की । " [1]

समासोक्ति

मान छोड़ दे, मान अरी,
कली, अली आया, हँसकर ले, यह बेला फिर कहाँ धरी ?
सिर न हिला झोकों में पड़कर, रख सहृदयता सदा हरी,
छिपा न उसको भी प्रियतम से यदि है भीतर धूलि भरी. "[2]

अप्रस्तुत प्रशंसा

" री, आवेगा फिर भी वसन्त,
जैसे मेरे प्रिय प्रेमवन्त ।
दुःखों का भी है एक अन्त,
हो रहिए दुर्दिन देख मूक । " [3]

अर्थान्तरन्यास

" दीप-कुल की ज्योति निष्प्रभ हो निरी,
रह गई अब एक घेरे में घिरी ।
किन्तु दिनकर आ रहा, क्या सोच है ?
उचित ही गुरुजन- निकट संकोच है । " [4]

विरोधाभास

" हो गया निर्गुण सगुण साकार है,
ले लिया अखिलेश ने अवतार है । " [5]
" अवध को अपनाकर त्याग से । " [6]

---

1. साकेत, पृ. 155
2. वही, पृ. 318
3. वही, पृ. 320
4. वही, पृ. 25
5. वही, पृ. 18
6. वही, पृ. 268

231

विभावना

" सूर्य का यद्यपि नहीं आना हुआ,
किन्तु समझो, रात का जाना हुआ।
क्योंकि उसके अंग पीले पड़ चले,
रम्य- रत्नाभरण ढ़ीले पड़ चले। " [1]

कैतवापहनुति

" वैर-शुद्धि के मिष उस खल ने
सीता हरने की ठानी। " [2]

उत्प्रेक्षा

" तब लंका पर हुई चढ़ाई,
सजी ऋक्ष- वानर सेना,
मिल मानों दो सलिल राशियाँ
उमड़ी फैलाकर फेना। " [3]

छन्द- विधान
=========

छन्द काव्य का शृंगार है. छंद के सुमधुर प्रसाधनों से सजकर कविता कामिनी अद्भुत सौन्दर्य को प्राप्त होती है, उसकी गति में एक मनोहारिणी झंकार आती है, वह कान्ता के कोमल स्वर पर अनायास ही अपना अधिकार जमा लेती है. " [4] छन्द काव्य के नाद सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं.

" पंचवटी " ताटंक और वीर छन्द में लिखी गई रचना है. ताटंक छन्द में 30 मात्राएँ रहती हैं, इसकी 16 वीं और 14 वीं मात्रा पर यति पड़ती है. इस छन्द के अंत में मगण ऽ ऽऽऽ ऽ रहता है.

---

1. साकेत, पृ. 24
2. प्रदक्षिणा, पृ. 39
3. वही, पृ. 58
4. साकेत में काव्य, संस्कृति और दर्शन - डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, पृ. 256

232

" बोलीं फिर उस बाला से वे सुस्मितपूर्वक वैसे ही-
" अजी, खिन्न तुम न हो, हमारे ये देवर हैं ऐसे ही ।
" घर में ब्याही बहू छोड़कर
यहाँ भाग आये हैं ये,
इस वय में क्या कहूँ, कहाँ का
यह विराग लाये हैं ये । " [1]

वीर छन्द में 16 मात्राओं के बाद यति पड़ती है. इसके अंतमें गुरु-लघु रहते हैं. यह छन्द @ 31 मात्राओं का छन्द है.

" नहीं जानतीं हाय ! हमारी
माताएँ आमोद- प्रमोद,
मिली हमें है कितनी कोमल,
कितनी बड़ी प्रकृति की गोद ।
इसी खेल को कहते हैं क्या
विद्वज्जन जीवन- संग्राम ?
तो इसमें सुनाम कर लेना
है कितना साधारण काम । " [2]

साकेत

महाकाव्य " साकेत " की छन्द योजना विविधता और विभिन्नताओं को लिये हुए हैं. " साकेत " का " समर्पण " दोहा छन्द में लिखा गया है. " मंगल- कामना " में मधुमालती का स्वच्छन्द प्रयोग हुआ है. राम-विषयक पद्य धनाक्षरी का उत्तर चरणार्द्ध में लिखा गया है. मनहरण कवित में " मंगलाचरण " लिखा गया है. प्रथमसर्ग में पीयूषवर्ष छन्द का प्रयोग हुआ है और सर्गांत में चौपाई और रूपमाला छन्द है. द्वितीय सर्ग श्रृंगार छन्द में लिखा गया है तथा सर्गांत में प्लवंगम और हाकलि छन्द का

1. पंचवटी, पृ. 41
2. वही, पृ. 19

प्रयोग किया है. तृतीय सर्ग सुमेरु छन्द में और सर्गांत में सरसी और राम छन्द प्रयुक्त हुए हैं. कवि ने चतुर्थ सर्ग को मानव या हाकलि छन्द में लिखा है और सर्गांत में सार और तोमर छन्द प्रयुक्त हुए हैं. पंचम सर्ग में प्लवंगम छन्द और सर्गांत में घनाक्षरी और दोहा छन्द का प्रयोग हुआ है. पदपा- दाकुलक छन्द में षष्ठ सर्ग लिखा गया है. गीतिका और मधुमालती छन्द का प्रयोग सर्गांत में हुआ है. सप्तम सर्ग में चन्द्र छन्द या सरस छन्द का विस्तार मिलता है और सर्गांत में घनाक्षरी और समानिका छन्द. अष्टम सर्ग राधिका छन्द में और सर्गांत में वीर और अरिल्ल छन्द है. नवम सर्ग में कवि ने विविध छन्दों का प्रयोग किया है. जो इस प्रकार है - " मंदाक्रान्ता, द्रुतविलम्बित, आर्या, दोहा, गीतिका, उपेन्द्रवज्रा, शालिनी, भुजंग- प्रयात, स्त्रग्धरा, हरिगीतिका, शिखरिणी. चौपाई, सार, मालिनी, पृथ्वी, रास, इन्द्रवज्रा, हरिणी, सार छन्द के अंतमें एक गुरु वर्ण के योग से नव्य छन्द- सृष्टि जिसका " शास्त्रीय नाम " प्रियलो- चना " है. सोरठा, पदपादाकुलक, अरिल्ल, सरसी, वीर छन्द की गुरुवर्णमयी तुकांतता, दुमिल, सवैया, वसंततिलका, विजया, चौपाई, हाकिल, उपमान, मनहरण, कवित्त, समान सवैया, सुमद्रिका और मालती छन्द का योग, अनुष्टुप, भुजंगी, उपचित्रा, कुंडलियाँ, दंडालिनी, नित, शोकहर, दिग्पाल, तोमर. सुन्दरी सवैया, श्रृंगार, पद्धरी, श्रृंगार और गोपी छन्द का योग, पीयूषवर्ष, शोभन, प्रमिताक्षरा, उपजाति, हरिदरा. दशम सर्ग में वियोगिनी वृत्त और सर्गांत में मालिनी और अनुष्टुप का प्रयोग हुआ है. एकादश सर्ग वीर और ताटंक में और सर्गांत में मनहरण कवित्त और दोहा छन्द है. रोला छन्द है में द्वादश सर्ग लिखा गया है. इस सर्ग के अंतमें उल्लाला छन्द और उपजाति प्रयुक्त हुए हैं.

" साकेत " के तृतीय सर्ग में सुमेरु छन्द का प्रयोग हुआ है. " सुमेरु " छन्द 19 मात्राओं का छन्द है. इसकी 12 वीं और 7 वीं मात्रा पर विराम आता है.

---

1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य, कमलाकांत पाठक, पृ. 695

234

" जहाँ अभिषेक अम्बुद छा रहे थे,
मयूरों- से सभी मुद पा रहे थे । " [1]

प्रदक्षिणा

" प्रदक्षिणा " सवा सौ ताटंक और वीर छन्द में लिखी गयी रचना है.

ताटंक छन्द 30 मात्रा का छन्द है. इसकी 16 वीं और 14 वीं मात्रा पर विराम आता है. इसके अंतमें ऽऽऽ रहता है.

" बोले आतुर हो प्रभु उनसे -
" भाई, तुम कैसे आये ? "
नत होकर लक्ष्मण ने उनको
बतलाया जैसे आये । " [2]

वीर छन्द 31 मात्राओं का छन्द है इसके 16 वीं और 15 वीं मात्रा पर यति पड़ती है. और अन्त में गुरु लघु रहते हैं.

" काल-फणी की मणि पर जिसने
फैलाया है अपना हाथ,
उसी अभागे का दुख मुझको
बोले लक्ष्मण से रघुनाथ । " [3]

अतः हम कह सकते हैं कि उपरोक्त काव्य कृतियाँ भाषा, शैली और संवाद सभी दृष्टियों से सन्मुन्नत है. इनका कला-पक्ष अत्यन्त भव्य है.

---

1. साकेत, पृ. 69
2. प्रदक्षिणा, पृ. 45
3. वही, पृ. 48